

प्रेषक,

श्री राजेन्द्र कुमार,
अपर सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

अपर प्रमुख वन संरक्षक एवं नोडल अधिकारी,
वन संरक्षण,
उत्तराखण्ड, देहरादून।

वन एवं पर्यावरण विभाग

देहरादून: दिनांक 31 दिसम्बर, 2013.

विषय:- जनपद-चमोली के अन्तर्गत गाढ़ी ब्रिज में भारत तिब्बत सीमा पुलिस के आवागमन शिविर के पेयजल योजना के निर्माण हेतु 0.051 हे० वन भूमि का गैर वानिकी कार्यों हेतु भारत तिब्बत सीमा पुलिस को प्रत्यावर्तन।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या 1487/2जी-377 (चमोली) दिनांक 18-12-2013 के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल महोदय जनपद-चमोली के अन्तर्गत गाढ़ी ब्रिज में भारत तिब्बत सीमा पुलिस के आवागमन शिविर के पेयजल योजना के निर्माण हेतु 0.051 हे० वन भूमि का गैर वानिकी कार्यों हेतु भारत तिब्बत सीमा पुलिस को प्रत्यावर्तन किये जाने की अनुमति भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के पत्र संख्या 11-9/98-एफ0सी0 दिनांक 03-01-2005 तथा पत्र संख्या 11-9/98-एफ0सी0 दिनांक 11-09-2009 में उल्लिखित व्यवस्था के अनुसार निम्नलिखित शर्तों के तहत प्रदान की जाती है :-

1. प्रश्नगत वन भूमि की वर्तमान वैधानिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होगा।
2. प्रयोक्ता एजेन्सी उक्त भूमि का उपयोग केवल कथित प्रयोजन हेतु ही करेगा तथा वह उक्त भूमि अथवा उसके किसी भाग को किसी अन्य विभाग, संस्था अथवा व्यक्तियों को हस्तान्तरित नहीं किया जायेगा।
3. प्रयोक्ता एजेन्सी के सम्बन्धित अधिकारी, कर्मचारी अथवा ठेकेदार या उक्त व्यक्तियों के अधीन या उनसे सम्बन्धित कोई भी व्यक्ति किसी भी वन सम्पदा को क्षति नहीं पहुँचायेंगे और यदि उक्त व्यक्तियों द्वारा वन सम्पदा को कोई क्षति पहुँचायी जाती है, अथवा कोई क्षति पहुँचती है तो उसके लिए सम्बन्धित प्रभागीय वनाधिकारी द्वारा निर्धारित प्रतिकर, प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा देय होगा।
4. उक्त वन भूमि प्रयोक्ता एजेन्सी के उपयोग में तब तक बनी रहेगी, जब तक कि प्रयोक्ता एजेन्सी को उसकी उक्त प्रयोजन हेतु आवश्यकता रहेगी। यदि प्रयोक्ता एजेन्सी को उक्त वन भूमि अथवा उसके किसी भाग की आवश्यकता न रहेगी तो यथास्थिति उक्त वन भूमि अथवा उसका ऐसा भाग जो प्रयोक्ता एजेन्सी के लिए आवश्यक न रहे, मूल विभाग को बिना किसी प्रतिकर के भुगतान किये यथास्थिति वापस प्राप्त हो जायेगी।
5. वन विभाग के कर्मचारी/अधिकारी अथवा उसके अभिकर्ताओं को किसी भी समय जब वे आवश्यक समझें, प्रश्नगत वन भूमि का निरीक्षण करने का अधिकार होगा।
6. वन विभाग द्वारा प्रयोक्ता एजेन्सी के व्यय पर 100 वृक्षों का वृक्षारोपण एवं 10 वर्षों तक उसका रख-रखाव किया जायेगा।
7. वन विभाग द्वारा प्रयोक्ता एजेन्सी के व्यय पर प्रस्तावित स्थल के आस-पास रिक्त पड़े स्थानों पर यथोचित वृक्षारोपण एवं 10 वर्षों तक रख-रखाव किया जायेगा।
8. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा परियोजना के निर्माण व रख रखाव के दौरान आस-पास के क्षेत्र की वनस्पतियों एवं जीव जन्तुओं को किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचायी जायेगी।
9. परियोजना के निर्माण में स्थल पर कार्यरत मजदूरों/स्टाफ को रसोई गैस/किरोसिन तेल की आपूर्ति की जायेगी, जिससे निकटवर्ती वनों को क्षति न हो।
10. प्रस्तावित वन भूमि को अतिरिक्त आस-पास की वन भूमि से निर्माण में मिट्टी/पत्थर काटने एवं भरने का कार्य नहीं किया जायेगा।
11. प्रयोक्ता एजेन्सी वन विभाग को वानिकी कार्यों के लिए निःशुल्क जलापूर्ति करेगा।

12. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा पाईप हेतु खोदी गई नाली में पाईप डालने के उपरान्त पुनः ठीक से मिट्टी भरान किया जायेगा व भूक्षरण को रोकने हेतु आवश्यक वानस्पतिक प्रजातियों/घास/झाड़ियों का रोपण किया जायेगा।
13. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा दोनों इन्टेक चैम्बर से जल श्रोत से विद्यमान जल के 50 प्रतिशत से अधिक का विदोहन नहीं किया जायेगा और इन्टेक चैम्बर भी इसी के अनुसार निर्मित किये जायेंगे।
14. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा नाली से उत्सर्जित मलवे को सुरक्षित स्थल पर ढुलान करके ले जाया जायेगा।
15. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा 100 वृक्षों के वृक्षारोपण एवं प्रस्तावित कार्य स्थल के आस-पास रिक्त पड़े स्थानों पर यथोचित वृक्षारोपण की धनराशियों को भारत सरकार के स्तर पर गठित तदर्थ क्षतिपूरक वृक्षारोपण निधि प्रबन्ध एवं नियोजन एजेन्सी (ad-hoc CAMPA) को स्थानान्तरित कर दिया गया है।
16. प्रयोक्ता एजेन्सी से प्रस्तावित वन भूमि का वर्तमान बाजार दर पर जिलाधिकारी से मूल्य निर्धारित कराकर वन भूमि हस्तान्तरण से पूर्व वसूल किया जायेगा।
17. प्रयोक्ता एजेन्सी वन अधिकार अधिनियम, 2006 के अन्तर्गत सम्बन्धित जिले के जिलाधिकारी का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करेगा कि वनाधिकार अधिनियम के अन्तर्गत प्रस्तावित वन भूमि में कोई भी दावा लम्बित नहीं है एवं आदिम जनजाति/प्रारम्भिक कृषक समुदाय के हित प्रभावित नहीं होते हैं। उक्त प्रमाण-पत्र उपलब्ध कराये जाने के पश्चात् ही वन भूमि पर कार्य आरम्भ किया जायेगा।
18. प्रयोक्ता एजेन्सी द्वारा प्रस्ताव में निहित किसी भी निर्धारित शर्त का अनुपालन नहीं होने अथवा असंतोषजनक अनुपालन होने की स्थिति में भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा स्वीकृति को निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित है।

2. उक्त आदेश उत्तराखण्ड शासन द्वारा जारी कार्यालय ज्ञाप सं०-104/26/प्र०स०-आ०व०ग्रा०वि० दि०-1-1-2001, कार्यालय ज्ञाप सं०-110/26/प्र०स०-आ०व०ग्रा०वि० दि०-4-1-2001, शासनादेश संख्या म. -666/14-2-600(51)/1999 दिनांक 19-7-99 एवं उत्तराखण्ड शासन के वन एवं पर्यावरण विभाग की कार्यालय ज्ञाप संख्या:-314/7-1-2003-26(37)/2003 दिनांक 27-8-2003 में प्रदत्त अधिकारों के अन्तर्गत जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय,

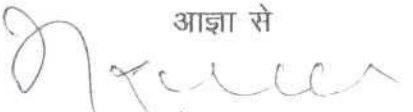
(राजेन्द्र कुमार)
अपर सचिव।

संख्या:- एस०जी०-298 / 7-1-2013-700(383) / 2013 दिनांकित।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. अपर प्रमुख वन संरक्षक (केन्द्रीय), भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, कैम्प कार्यालय, एफ०आर०आई०, देहरादून।
2. प्रमुख सचिव, पेयजल विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
3. महालेखाकार, लेखा एवं हकदारी, उत्तराखण्ड, देहरादून।
4. वन संरक्षक, नन्दादेवी बायोस्फियर रिजर्व, गोपेश्वर।
5. जिलाधिकारी, जनपद-चमोली।
6. प्रभागीय वनाधिकारी, नन्दादेवी राष्ट्रीय पार्क, जोशीमठ।
7. सेनानी, प्रथम वाहिनी, भारत तिब्बत सीमा पुलिस, सुनील, जोशीमठ।
- ✓ 8. निदेशक, राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, (NIC) उत्तराखण्ड सचिवालय, देहरादून को इस आशय से प्रेषित कि कृपया इस शासनादेश को एन.आई.सी. की वेबसाइट पर अपलोड करने का कष्ट करें।

आज्ञा से


(राजेन्द्र कुमार)
अपर सचिव।